पार्क में

विनोद पदरज

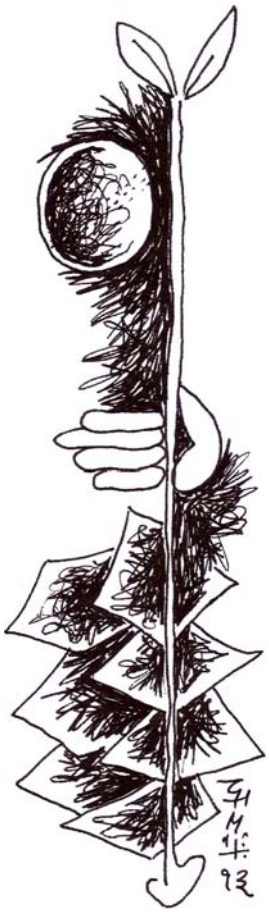

हाथों में छड़ियां लिए
कनटोप लगाए
पार्क में आते हैं बूढ़े
बच्चों को दकालते

झूले का मुंह लटक जाता है
रुआंसी हो उठती है फिसलपट्टी
गेंदें और पतंगें दुबक जाती हैं पौधों की
आड़ में
घास अन्यमनस्क और उदास हो जाती है

बाय बादी गैस अपच
हार्ट शुगर योगा तीर्थ
रुपये का सेर भर घी

ओ अस्ताचलगामी सूर्य
तनिक जल्दी-जल्दी समेटो अपनी रश्मियां
और जाओ
ताकि बूढ़े घर जाएं
और बच्चे आएं

अभी तो हवा भी एक ही चक्कर में
थककर
बैंच पर बैठ गई है। ◆

लेखक

विनोद पदरज

हिन्दी के जाने-माने कवि हैं और राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले की सांस्कृतिक गतिविधियों से सक्रिय रूप में जुड़े हुए हैं।